अध्याय
5

नेताजी का तुलादान

गोपाल प्रसाद व्यास

देखा पूरब में आज सुबह,एक नई रोशनी फूटी थी।
एक नई किरण ले नया संदेशा, अग्निबाण–सी छूटी थी।।
एक नई हवा ले नया राग,कुछ गुन–गुन करती आती थी।
आजाद परिंदों की टोली ,एक नई दिशा में जाती थी।।

एक नई कली चटकी इस दिन ,रौनक उपवन में आई थी।
एक नया जोश एक नई ताजगी ,हर चेहरे पर छाई थी॥
नेताजी का था जन्म–दिवस,उल्लास न आज समाता था।
सिंगापुर का कोना–कोना,मस्ती में भीगा जाता था ॥

हर गली, हाट,चौराहे पर, जनता ने द्वार सजाए थे।
हर घर में मंगलाचार खुशी के, बाँटे नए बधाए थे॥
पंजाबी वीर रमणियों ने, बदले सलवार पुराने थे।
थे नए दुपट्टे,नई खुशी में, गाए गए तराने थे॥

वे गोल बाँधकर बैठ गई, ढोलक मंजीर बजाती थीं।
हीर–रांझा को छोड़ आज,वे गीत पठानी गाती थीं॥
गुजराती बहनें खड़ी हुई,गरबा की नई तैयारी में।
मानो बसंत आया हो ज्यों ,सिंगापुर की फुलवारी में॥

महाराष्ट्र नंदिनी बहनों ने,इकतारा आज बजाया था।
स्वामी समर्थ के शब्दों को, गीतों में गति से गाया था॥
वे बंगवासिनी वीर बहूटी,फूली नहीं समाती थीं।
आँचल गर्दन में डाल ,इष्ट के सम्मुख शीश झुकाती थीं॥

प्यारा सुभाष चिरंजीवी हो, हो जन्मभूमि जननी स्वतंत्र।
माँ,कात्यायनि,ऐसा वर दो, भारत में फैले प्रजातंत्र॥
हर कंठ-कंठ से शब्द यही ,सर्वत्र सुनाई देते थे।
सिंगापुर के नर-नारी आज,उल्लसित दिखाई देते थे॥

उस दिन सुभाष सेनापति ने,फौजी झंडा फहराया था।
उस दिन परेड में सेनापति ने, फौजी सैल्यूट बजाया था॥
उस दिन सारे सिंगापुर में, स्वागत की नई तैयारी थी।
था तुलादान नेताजी का, लोगों में चर्चा भारी थी॥

उस रोज तिरंगे फूलों की, एक तुला सामने आई थी।
उस रोज तुला ने सचमुच ही, एक ऐसी शक्ति उठाई थी॥
जो अतुल,नहीं तुल सकती थी,दुनिया की किसी तराजू से।
जो ठोस ,सिर्फ बस ठोस ,जिसे देखो चाहे जिस बाजू से॥

वह महाशक्ति सीमित होकर,पलड़े में आज विराजी थी।
दूसरी ओर सोना,चाँदी हीरों की लगती बाजी थी॥
उस मंत्र-पूत, मुद मंडप में,सुमधुर शंख-ध्वनि छाई थी।
जब कुंदन सी काया सुभाष की,पलड़े में मुस्काई थी॥

एक वृद्धा का धन सर्वप्रथम ,उस धर्म-तुला पर आया था।
सोने की ईंटों में जिसने ,अपना सर्वस्व चढ़ाया था॥
गुजराती माँ की पाँच ईंट ,मानो पलड़े पर आई थी।
या पंचयज्ञ से हो प्रसन्न,कमला ही वहाँ समाई थीं॥

फिर क्या था, एक-एक करके ,आभूषण उतरे आते थे।
वे आत्मदान के साथ-साथ पलड़े पर चढ़ते जाते थे॥
मुंदरी आई,छल्ले आए,जो भी प्रेम की निशानी थे।
कंगन आए, बाजू आए,जो रस की स्वयं कहानी थे॥

आ गया हार,ले जीत स्वयं ,माला ने बंधन छोड़ा था।
ललनाओं ने परवशता की,जंजीरों को धर तोड़ा था॥
आ गई मूर्तियाँ मंदिर की ,कुछ फूलदान टिक्के आए।
तलवारों की मूठें आई,कुछ सोने के सिक्के आए॥

इस तुलादान के लिए, युवतियों ने आभूषण छोड़े थे।
जर्जर वृद्धाओं ने अपने, भेजे सोने के तोड़े थे॥
छोटी-छोटी कन्याओं ने भी ,करनफूल दे डाले थे।
ताबीज गलों से उतरे थे, कानों से उतरे बाले थे॥

प्रति आभूषण के साथ-साथ ,एक नई कहानी आती थी।
रोमांच नया, उद्‌गार नया, पलड़े में भरती जाती थी।
नस-नस में हिन्दुस्तानी के, बलिदान आज बल खाता था॥
सोना-चाँदी, हीरा -पन्ना ,सब उसको तुच्छ दिखाता था।।

अब चीर गुलामी का कोहरा, एक नई किरण जो आई थी।
उसने भारत की युग-युग से, यह सोई जोति जगाई थी॥
लोगों ने अपना धन सरबस ,पलड़े पर आज चढ़ाया था।
पर वजन अभी पूरा न हुआ,काँटा न बीच में आया था॥

तो पास खड़ी सुंदरियों ने, कानों के कुंडल खोल दिए।
हाथों के गजरे खोल दिए, जूड़ो के पिन अनमोल दिए॥
एक सुंदर सुघड़ कलाई की,खुल 'रिस्टवाच' भी आई थी।
पर नही तराजू की डंडी ,काँटे को सम पर लाई थी॥

कोने में तभी सिसकियों की, देखा आवाज सुनाई दी।
कप्तान लक्ष्मी लिए एक,तरुणी को साथ दिखाई दी॥
उसका जूड़ा था खुला हुआ,आँखे सूजी थी लाल-लाल।
इसके पति को युद्धस्थल में ,कल निगल गया था कठिन काल॥

नेताजी ने टोपी उतार, उस महिला का सम्मान किया।

जिसने अपने प्यारे पति को ,आजादी पर कुर्बान किया॥

महिला के कंपित हाथों से,पलड़े में शीशफूल आया।
सौभाग्य चिह्न के आते ही, काँटा सहमा, कुछ थर्राया॥

दर्शक जनता की आँखो में, आँसू छल-छल कर आए थे।

बाबू सुभाष ने रुद्ध कंठ से यों कुछ बोल सुनाए थे॥

'' हे बहन,देवता तरसेंगें ,तेरे पुनीत पदवंदन को।

हम भारतवासी याद रखेगें ,तेरे करुण क्रंदन को॥' '

पर पलड़ा अभी अधूरा था, सौभाग्य चिह्न को पाकर भी।

थी स्वर्णराशि में अभी कमी ,इतना बेहद गम खाकर भी॥

पर वृद्धा एक तभी आई,जर्जर तन से अकुलाती सी।

अपनी छाती से लगा एक, सुंदर सा चित्र छिपाती सी॥

बोली-''अपने इकलौते का ,मै चित्र साथ में लाई हूँ।

नेताजी लो सर्वस्व मेरा बहुत दूर से आई हूँ॥' '

वृद्धा ने दी तस्वीर पटक,शीशा चरमरकर चूर हुआ।

वह स्वर्ण चौखटा निकल आप ,उसमें से खुद ही दूर हुआ॥

वह क्रुद्ध सिंहनी सी बोली-''बेटे ने फाँसी खाई थी।

उसने माता के दूध -कोख को, कालिख नहीं लगाई थी॥

हाँ इतना गम है, अगर कहीं,यदि एक पुत्र भी पाती मैं।

तो उसको भी अपनी भारतमाता की भेंट चढ़ाती मैं॥' '

इन शब्दों के ही साथ-साथ ,चौखटा तुला पर आया था।

हो गई तुला समतल ,काँटा,झुक गया ,नहीं टिक पाया था॥

बाबू सुभाष उठ खड़े हुए ,वृद्धा के चरणों को छूते।

बोले ''माँ मैं कृतकृत्य हुआ,तुम-सी माताओं के बूते॥

है कौन आज जो कहता है , दुश्मन बरबाद नहीं होगा।

है कौन आज जो कहता है, भारत आजाद नहीं होगा॥' '

अभ्यास

1. नेताजी के तुलादान के अवसर पर सिंगापुर की सजावट का वर्णन कीजिए।
2. 'नेताजी का था जन्म दिवस, उल्लास न आज समाता था' , के अनुसार सिंगापुर के निवासियों के जोश और उल्लास का वर्णन कीजिए ।
3. नेताजी के तुलादान में कौन-कौन सी वस्तुएँ अर्पित की गईं थीं?
4. नेताजी ने टोपी उतारकर किस महिला का सम्मान किया था? और क्यों? लिखिए।
5. 'हे बहन, देवता तरसेंगे ,तेरे पुनीत पदवंदन को।' किसने, किससे और क्यों कहा ?
6. तराजू के पलड़े सम पर कैसे आए?
7. इस पाठ से हमें क्या प्रेरणा मिलती है? संक्षेप में लिखिए।

योग्यता-विस्तार

1. इस कविता को कंठस्थ कीजिए और विद्यालय के किसी आयोजन में इसका जोश के साथ सस्वर गायन कीजिए।
2. 'स्वतंत्रता के दीवाने'-विषय पर एक छोटी सी कविता लिखिए।
3. निम्नलिखित बिन्दुओं के संबंध जानकारी प्राप्त करते हुए-

   नेता जी का जीवन वृत्त तैयार कीजिए -

   तुलादान क्यों किया जा रहा था?

   नेताजी के क्रिया-कलापों एवं जीवन की प्रमुख घटनाएँ।

   'आजाद हिंद फौज'का गठन।

* * *